IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.67
Volume 5, Issue 1, March 2025

फिल्म जगत में संगीत तालों का स्वरूप

दुर्गेश चन्द्र विश्वकर्मा[1] and डॉ. मंजू श्रीवास्तव[2]
शोधार्थी, नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), जमुनीपुर, कोटवा, प्रयागराज[1]
विभागाध्यक्ष(संगीत विभाग), नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), जमुनीपुर, कोटवा, प्रयागराज[2]

संक्षिप्त सार

फिल्म जगत में ताल एक प्राचीन संगीत अवधारणा है जिसका पता हिंदू धर्म के वैदिक युग के ग्रंथों जैसे सामवेद और वैदिक भजनों को गाने के तरीकों से लगाया जा सकता है। उत्तर और दक्षिण भारत की संगीत परंपराएँ, विशेषकर राग और ताल प्रणालियाँ, लगभग 16वीं शताब्दी तक अलग नहीं मानी जाती थीं। इसके बाद, भारतीय उपमहाद्वीप में इस्लामी शासन के अशांत काल के दौरान, परंपराएँ अलग हो गईं और अलग-अलग रूपों में विकसित हुईं। उत्तर की ताल प्रणाली को हिंदुस्तानी कहा जाता है , जबकि दक्षिण को कर्नाटक कहा जाता है । हालाँकि, उनके बीच ताल प्रणाली में अंतर की तुलना में अधिक सामान्य विशेषताएं हैं। भारतीय परंपरा में ताल संगीत के समय आयाम को समाहित करता है, जिसके माध्यम से संगीत की लय और रूप को निर्देशित और व्यक्त किया जाता है।जबकि एक ताल संगीत मीटर को वहन करता है, यह जरूरी नहीं कि एक नियमित रूप से आवर्ती पैटर्न को दर्शाता हो। प्रमुख शास्त्रीय भारतीय संगीत परंपराओं में, संगीत के टुकड़े को कैसे प्रस्तुत किया जाना है, इसके आधार पर बीट्स को पदानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित किया जाता है। दक्षिण भारतीय प्रणाली में सबसे व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाने वाला ताल आदि ताल है । भारतीय फिल्म प्रणाली में, सबसे आम ताल तीनताल है । इस शोध को पूरा करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रिय पत्र -पत्रिका,पुस्तकालय आदि से सूचनाओं को ग्रहण किया गया है ।

मुख्य शब्द :-ताल,संगीत,विधा आदि

परिचय

फिल्म जगत के संगीत में ताल की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और बहुआयामी होती है। ताल न केवल गीत की संरचना और लय को सुनिश्चित करता है, बल्कि यह भावनात्मक और नाटकीय प्रभाव को भी बढ़ाता है। फिल्मी संगीत में ताल की भूमिका को विभिन्न पहलुओं में समझा जा सकता है:

1. संगीत की संरचना और लय:लय और व्यवस्था: ताल गीतों को एक निश्चित लय और क्रम में व्यवस्थित करता है, जिससे संगीत एक स्वाभाविक प्रवाह में रहता है। यह संगीत की सुनने और समझने की सुविधा प्रदान करता है।संगीतकार और गायक की मार्गदर्शिका: ताल संगीतकार और गायक को एक निश्चित ढांचा और मापदंड देता है, जिससे उनका प्रदर्शन सुसंगत और प्रभावशाली होता है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

2. भावनात्मक प्रभाव(मूड का निर्माण): ताल का चयन गीत के मूड को स्थापित करता है। धीमी ताल रोमांटिक और गंभीर भावनाओं को व्यक्त करती है, जबकि तेज ताल उत्साह और ऊर्जा को प्रकट करती है।दृश्य और भावनाएँ: फिल्म में ताल का प्रयोग दृश्य और भावनाओं को व्यक्त करने में किया जाता है। ताल गीतों को नाटकीय प्रभाव और दृश्य की गहराई को बढ़ाने में मदद करता है।

3. नृत्य और कोरियोग्राफी (नृत्य ताल): नृत्य गीतों में ताल नृत्य के ठहराव और गति को नियंत्रित करता है। सही ताल नृत्य के हर कदम और मूवमेंट को सहज और आकर्षक बनाता है।कोरियोग्राफी के लिए आधार: ताल कोरियोग्राफर को नृत्य के पैटर्न और चॉलेंजेस को डिज़ाइन करने में मदद करता है, जिससे नृत्य दृश्य और अधिक प्रभावशाली बन जाता है।

4. संगीत के प्रकार और शैलियाँ(पारंपरिक और शास्त्रीय ताल): पारंपरिक और शास्त्रीय संगीत में ताल का विशेष महत्व होता है। यह फिल्मी गीतों में शास्त्रीय रागों और लोक धुनों को शामिल करने में मदद करता है।आधुनिक ताल और पाश्चात्य प्रभाव: आधुनिक फिल्मी संगीत में पाश्चात्य ताल और इलेक्ट्रॉनिक संगीत का समावेश हुआ है, जो गीतों को एक नई ध्वनि और ऊर्जा प्रदान करता है।

5. प्रयोग और नवाचार(ताल के प्रयोग में विविधता): फिल्मी संगीत में ताल की विभिन्न शैलियों और प्रकारों का प्रयोग किया जाता है, जैसे दादरा, कहरवा, झपताल, और EDM ताल। यह विविधता संगीत को एक नया और रोमांचक स्वरूप देती है।नवीन प्रयोग: आधुनिक संगीतकार पारंपरिक तालों में नवाचार कर रहे हैं और नई ताल संरचनाओं का प्रयोग कर रहे हैं, जिससे संगीत की रचनात्मकता और जटिलता बढ़ रही है।

1. **इतिहास और विकास (प्रारंभिक चरण) (1930-1950):**भारतीय फिल्म संगीत की शुरुआत 1930 के दशक में हुई, जब चुपके-चुपके (1935) और अलाम आरा (1931) जैसी पहली ध्वनि फिल्मों ने संगीत को प्रमुखता दी। इस दौर में शास्त्रीय और लोक संगीत का प्रयोग प्रारंभिक फिल्मों में हुआ।
2. **स्वर्ण युग (1950-1960):**इस युग में फिल्मी संगीत ने एक नया मोड़ लिया, जिसमें शास्त्रीय और लोक संगीत के तत्वों का सम्मिलन हुआ। नौशाद, सी. रामचंद्र, और एस. डी. बर्मन जैसे संगीतकारों ने इस दौर में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
3. **मध्य युग (1970-1980):**इस युग में पाश्चात्य संगीत का प्रभाव बढ़ा, और आर. डी. बर्मन, लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल जैसे संगीतकारों ने आधुनिक ताल और संगीत शैलियों का प्रयोग किया।
4. **आधुनिक युग (1990 से वर्तमान):इस समय में डिजिटल तकनीक**, इलेक्ट्रॉनिक संगीत, और वैश्विक प्रभाव ने फिल्मी संगीत को एक नया रूप दिया। संगीतकारों ने प्रयोगात्मक और विविध शैलियों का उपयोग किया।

1. संगीतकार और गायक:

भारतीय फिल्म संगीत में कई महान संगीतकार हुए हैं, जैसे नौशाद, एस. डी. बर्मन, लता मंगेशकर, मोहम्मद रफी, और आर. डी. बर्मन। उन्होंने अपने अद्वितीय संगीत और शैली से फिल्मी संगीत को एक नई पहचान दी।गायक: लता मंगेशकर, मोहम्मद रफी, किशोर कुमार, और आशा भोंसले जैसे गायकों ने फिल्मी संगीत में अपनी आवाज़ से महत्वपूर्ण योगदान दिया।

2. प्रमुख शैलियाँ (शास्त्रीय संगीत):

भारतीय शास्त्रीय संगीत के राग और ताल फिल्मी संगीत में प्रमुख रूप से शामिल किए गए हैं।लोक संगीत: विभिन्न भारतीय लोक शैलियाँ जैसे पंजाबी, भोजपुरी, और राजस्थानी संगीत फिल्मी संगीत में अद्वितीय रंग भरते हैं।पाश्चात्य संगीत: जैज़, रॉक, और डिस्को जैसे पाश्चात्य संगीत के तत्व भी फिल्मी संगीत में शामिल हुए हैं।इलेक्ट्रॉनिक संगीत: डिजिटल तकनीक और इलेक्ट्रॉनिक संगीत ने आधुनिक फिल्मी संगीत में नई ध्वनियाँ और प्रभाव जोड़े हैं।

3. ताल और रिदम:

फिल्मी संगीत में ताल का विशेष महत्व होता है, जो गीतों को लय और संरचना प्रदान करता है। पारंपरिक तालों के साथ-साथ पाश्चात्य और आधुनिक तालों का प्रयोग भी किया जाता है।5. फिल्मी संगीत का प्रभाव:भावनात्मक प्रभाव: फिल्मी संगीत दृश्य और भावनाओं को व्यक्त करने का महत्वपूर्ण साधन है, जो फिल्म के कथानक और पात्रों की गहराई को बढ़ाता है।संस्कृतिक प्रभाव: यह भारतीय संस्कृति, परंपराओं, और समाज के विभिन्न पहलुओं को दर्शाता है और वैश्विक दर्शकों के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है।

फिल्मी संगीत में ताल का महत्व अविस्मरणीय है। ताल, संगीत की संरचना और उसकी प्रवाह को परिभाषित करता है, जिससे संगीत को एक निश्चित लय और समयबद्धता मिलती है। यह विभिन्न गीतों की ध्वनि, मिजाज और शैली को भी आकार देता है। फिल्मी संगीत में ताल के महत्व, उसके प्रकार और प्रभाव को समझने के लिए निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार किया जा सकता है

ताल का महत्वलयबद्धता और संरचना

ताल गीत को एक निश्चित ढांचा प्रदान करता है, जिससे संगीत का प्रवाह और लय सुनिश्चित होता है।मूड और भावनाओं का निर्माण: ताल का चुनाव गीत के मूड और भावनाओं को स्थापित करता है। उदाहरण के लिए, धीमी ताल रोमांटिक या भावुक गीतों के लिए उपयुक्त होती है, जबकि तेज ताल ऊर्जा और उत्साह पैदा करती है।

संगीतकार और गायक का मार्गदर्शन

ताल संगीतकार और गायक को एक निश्चित मापदंड पर काम करने की सुविधा प्रदान करता है, जिससे उनका प्रदर्शन सुसंगत और प्रभावशाली होता है।ताल के प्रकारभारतीय फिल्मी संगीत में कई प्रकार के तालों का उपयोग होता है, जो शास्त्रीय और लोक संगीत से प्रेरित होते हैं

दादरा ताल: 6 मात्रा का ताल, जिसे अक्सर हल्के और रोमांटिक गीतों में प्रयोग किया जाता है।

रूपक ताल: 7 मात्रा का ताल, जो फिल्मी गीतों में लोकप्रिय है।

एक ताल: 12 मात्रा का ताल, जो शास्त्रीय और गंभीर गीतों में प्रयुक्त होता है।

कहरवा ताल: 8 मात्रा का ताल, जो सबसे लोकप्रिय है और हर प्रकार के गीतों में इस्तेमाल होता है।

झपताल: 10 मात्रा का ताल, जो अधिकतर शास्त्रीय और नृत्य गीतों में प्रयुक्त होता है।फिल्मी संगीत में ताल का विकास

प्रारंभिक युग (1950-1960)

भारतीय फिल्म संगीत का स्वर्णिम काल माना जाता है। इस दौर में शास्त्रीय संगीत का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। गीतों में ताल की संरचना सुस्पष्ट और प्रमुख होती थी, जिससे संगीत को एक विशेष पहचान और गहराई मिलती थी।शास्त्रीय संगीत का प्रभावइस युग में कई संगीतकार शास्त्रीय संगीत में पारंगत थे और उन्होंने अपने ज्ञान का उपयोग फिल्मी गीतों में किया।संगीतकारनौशाद ने 'बैजू बावरा' (1952) जैसी फिल्मों में शास्त्रीय रागों का उत्कृष्ट प्रयोग किया।सी. रामचंद्र ने'अनारकली' (1953) और 'आज़ाद' (1955) जैसी फिल्मों में उनके शास्त्रीय संगीत का गहरा प्रभाव था।एस. डी. बर्मन इनके संगीत में बंगाली लोक संगीत और शास्त्रीय संगीत का मिश्रण दिखता है।गायक:लता मंगेशकर: उनकी आवाज़ में शास्त्रीय संगीत की परख स्पष्ट झलकती थी।मोहम्मद रफी: उन्होंने विभिन्न शैलियों में गाया, लेकिन शास्त्रीय संगीत में भी उनकी पकड़ मजबूत थी।ताल की संरचनादृढ़ ताल: इस युग के गीतों में ताल की संरचना बहुत स्पष्ट थी। हर गीत का अपना एक विशिष्ट ताल होता था, जो गीत को एक स्थायित्व और लय देता था।'मन तड़पत हरि दर्शन को आज' (बैजू बावरा) - इस भजन में राग दरबारी का उपयोग और 16 मात्रा के ताल का स्पष्ट प्रयोग है।'मधुबन में राधिका नाचे रे' (कोहिनूर) - इस गीत में शास्त्रीय ताल और राग हंसध्वनि का सुंदर मिश्रण है।लयबद्धता और अनुशासन: संगीतकारों ने गीतों में ताल के उपयोग को बड़ी बारीकी से निभाया। गीतों की लय और ताल का अनुशासन सुनिश्चित करता था कि गीत सुसंगत और प्रभावशाली बने।'आयेगा आने वाला' (महल) - इस गीत में ताल और लय का अद्वितीय समन्वय है, जो श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देता है।

मध्य युग (1970-1980)

भारतीय फिल्म संगीत का एक ऐसा दौर था जिसमें पाश्चात्य संगीत का प्रभाव बढ़ा और तालों में विविधता एवं आधुनिकता का समावेश हुआ। इस युग में फिल्मी संगीत में नवीन प्रयोग और संगीतकारों की सृजनशीलता ने गीतों को एक नया रूप दिया।पाश्चात्य संगीत का प्रभावइस दौर में भारतीय फिल्म संगीत में पाश्चात्य संगीत के तत्व जैसे जैज़, रॉक, डिस्को, और पॉप का समावेश होने लगा।संगीतकारआर. डी. बर्मन ये इस युग के सबसे प्रभावशाली संगीतकारों में से एक थे, जिन्होंने पाश्चात्य संगीत के तत्वों को भारतीय फिल्म संगीत में बड़े कुशलता से मिश्रित किया।लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल इस जोड़ी ने भी पाश्चात्य संगीत का उपयोग कर गीतों को एक नया अंदाज दिया।कल्याणजी-आनंदजी इन्होंने पाश्चात्य संगीत के साथ-साथ भारतीय शास्त्रीय संगीत का भी प्रयोग

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.67
Volume 5, Issue 1, March 2025

किया।गायककिशोर कुमार उनकी आवाज़ में पाश्चात्य संगीत के साथ भारतीय संगीत का अनोखा मिश्रण सुनने को मिलता है।आशा भोंसले इन्होंने पाश्चात्य शैली के कई गीत गाए और इनकी आवाज़ में विविधता थी।ताल की विविधता और आधुनिकतानई ताल संरचनाएं: इस युग में ताल की संरचनाओं में विविधता आई और कई नए तालों का प्रयोग हुआ।

डिस्को और रॉक ताल - ये ताल अधिक तेज और ऊर्जावान थे, जो डिस्को और रॉक संगीत में प्रयुक्त होते थे।उदाहरण: 'प्यार का तोहफा तेरा' (1982) - इस गीत में डिस्को ताल का स्पष्ट प्रभाव है।

ताल और लय का नवाचार- संगीतकारों ने पारंपरिक तालों में बदलाव कर उन्हें अधिक आधुनिक और आकर्षक बनाया।उदाहरण: 'दम मारो दम' (हरे रामा हरे कृष्णा) - इस गीत में रॉक संगीत और भारतीय ताल का मिश्रण है।

इलेक्ट्रॉनिक ताल - इस दौर में इलेक्ट्रॉनिक संगीत का प्रयोग भी बढ़ा, जिससे ताल की विविधता और जटिलता में वृद्धि हुई।उदाहरण: 'याद आ रही है' (लव स्टोरी) - इस गीत में इलेक्ट्रॉनिक ताल का प्रयोग है।

प्रमुख गीत और तालआर. डी. बर्मन के गीत'मेहबूबा मेहबूबा' (शोले)- इस गीत में पाश्चात्य ताल और भारतीय धुन का अनोखा मिश्रण है।

'चुरा लिया है तुमने जो दिल को' (यादों की बारात) - इसमें गिटार और ताल का अद्वितीय समन्वय है।लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल के गीत:'दफलीवाले दफली बजा' (सरगम) - इसमें दफली का ताल प्रमुखता से प्रयोग हुआ है।

'ओ साथी रे' (मुकद्दर का सिकंदर)- इस गीत में धीमी ताल और गहन भावनाओं का मिश्रण झलकता है।

आधुनिक युग (2000 और आगे)

भारतीय फिल्म संगीत के विकास में एक महत्वपूर्ण चरण है, जिसमें इलेक्ट्रॉनिक संगीत और नई तकनीकों का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस युग में ताल की जटिलता और विविधता में वृद्धि हुई है, और संगीतकारों ने ताल के प्रयोग में अधिक परिष्कृत और अभिनव तरीके अपनाए हैं।

इलेक्ट्रॉनिक संगीत का प्रभावडिजिटल तकनीक का उपयोग - संगीत निर्माण में नवाचार: डिजिटल ऑडियो वर्कस्टेशन (DAWs) और सॉफ्टवेयर साउंड सिंथेसाइज़र ने संगीत निर्माण को अधिक लचीला और विविधतापूर्ण बना दिया है। संगीतकार अब विभिन्न ध्वनियों और तालों को आसानी से मिश्रित और संशोधित कर सकते हैं।उदाहरण-'सत्यमेव जयते' (2012) - इस गीत में आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक ध्वनियों का प्रभाव है, जो ताल को एक नया रूप देता है।

नए संगीत शैलियाँ - EDM (इलेक्ट्रॉनिक डांस म्यूज़िक) - फिल्मी संगीत में EDM के तत्वों का समावेश हुआ है, जो गीतों को नृत्य और उत्सव के लिए उपयुक्त बनाता है।उदाहरण-'सेल्फी ले ले रे' (बैंग बैंग) - इस गीत में EDM के प्रभाव के साथ आधुनिक ताल का प्रयोग किया गया है।

ताल की जटिलता और विविधतामिश्रित ताल (पारंपरिक और आधुनिक ताल का मिश्रण) - आधुनिक फिल्मी संगीत में पारंपरिक तालों को आधुनिक तालों के साथ मिलाकर नए प्रयोग किए जाते हैं। इससे ताल की संरचना

अधिक जटिल और समृद्ध होती है।उदाहरण-'तुम ही हो' (आशिकी 2) - इस गीत में पारंपरिक और आधुनिक ताल का खूबसूरती से संयोजन है।

अनवर्ड ताल और ग्रूव्स - कुछ गीतों में असामान्य ताल संरचनाओं का प्रयोग किया जाता है, जो संगीत को एक नया स्वरूप प्रदान करते हैं।ग्रूव्स: ताल में ग्रूव्स (लयबद्धता) को बढ़ाकर संगीत को और अधिक आकर्षक और गतिशील बनाया जाता है।उदाहरण-'बद्री की दुल्हनिया' (बद्रीनाथ की दुल्हनिया) - इस गीत में ताल की जटिलता और ग्रूव्स का उपयोग हुआ है।

ट्रैकिंग और सैंपलिंग - पुराने गानों या ध्वनियों को नए गानों में सैंपल करके उन्हें एक नया संदर्भ दिया जाता है।ट्रैकिंग: ट्रैकिंग तकनीक के माध्यम से विभिन्न ध्वनियों और तालों को जोड़कर एक समृद्ध संगीत रचना तैयार की जाती है।उदाहरण-'रुख्सार' (मोहें जो शाही) - इस गीत में सैंपलिंग और ट्रैकिंग तकनीकों का प्रयोग देखा जा सकता है।

परिष्कृत और अभिनव तालडायनेमिक ताल(ताल की विविधताएँ) - आधुनिक युग में ताल के प्रयोग में कई नई विविधताएँ देखने को मिलती हैं, जो गीतों को और अधिक आकर्षक और विविध बनाती हैं।उदाहरण-'खूबसूरत' (खूबसूरत) - इस गीत में ताल की विविधता और आधुनिक ध्वनियाँ प्रस्तुत की गई हैं।

संगीत के विभिन्न प्रारूप(फ्यूजन और हाइब्रिड स्टाइल्स) - आधुनिक संगीतकार पारंपरिक भारतीय और पश्चिमी शैलियों को मिलाकर नए संगीत प्रारूप तैयार कर रहे हैं।उदाहरण: 'चिता चिता' (शिवाय) इस गीत में भारतीय और पश्चिमी ध्वनियों का मिश्रण देखा जा सकता है।ताल का गीतों पर प्रभावमूड का निर्माण: ताल गीत के मूड को परिभाषित करता है। उदाहरण के लिए, धीमी ताल से रोमांटिक और भावुक गीतों का निर्माण होता है, जबकि तेज ताल से उत्साह और जोश भरे गीत बनते हैं।प्रवाह और संरचना: ताल गीत को एक संरचित रूप देता है, जिससे उसके विभिन्न हिस्से सुचारू रूप से एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं।नृत्य और कोरियोग्राफी: ताल नृत्य गीतों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि नृत्यकला का प्रदर्शन ताल पर निर्भर करता है।

निष्कर्ष

फिल्मी संगीत में ताल का महत्व अत्यधिक है। यह संगीत को जीवन, संरचना और लय प्रदान करता है, जिससे गीत अधिक प्रभावशाली और आनंददायक बनते हैं। ताल के बिना, संगीत का मर्म और उसकी संप्रेषणीयता अधूरी रह जाती है। फिल्मी संगीत में ताल का उचित उपयोग गीत को एक नई ऊंचाई प्रदान करता है और उसे श्रोताओं के दिलों तक पहुंचाता है। 1950-1960 का युग भारतीय फिल्म संगीत में शास्त्रीय संगीत और ताल के प्रयोग का स्वर्णिम काल था। इस युग के संगीतकारों और गायकों ने शास्त्रीय संगीत की गहराइयों को फिल्मी गीतों में पिरोकर एक नई ऊंचाई प्रदान की। ताल की संरचना और उसके सटीक उपयोग ने गीतों को एक अनूठी पहचान दी, जिससे यह युग भारतीय संगीत प्रेमियों के लिए अविस्मरणीय बन गया।मध्य युग (1970-1980) भारतीय फिल्म संगीत का एक ऐसा दौर था जिसमें पाश्चात्य संगीत का प्रभाव व्यापक रूप से देखा गया। इस युग में ताल की विविधता और आधुनिकता ने फिल्मी संगीत को एक नया आयाम दिया। पाश्चात्य संगीत के तत्वों का कुशल प्रयोग और ताल

IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Impact Factor: 7.67

Volume 5, Issue 1, March 2025

में नवाचार ने इस दौर के गीतों को अमर बना दिया। यह समय भारतीय फिल्म संगीत के इतिहास में नवाचार और विविधता का प्रतीक है, जिसने संगीत प्रेमियों को अनगिनत यादगार गीत दिए।आधुनिक युग (2000 और आगे) में इलेक्ट्रॉनिक संगीत और नई तकनीकों के आगमन ने फिल्मी संगीत में ताल की जटिलता और विविधता को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाया है। इस समय ताल का प्रयोग अधिक परिष्कृत और अभिनव हो गया है, जिससे संगीत को नया और आकर्षक रूप मिला है। इस युग के संगीतकारों ने पारंपरिक और आधुनिक शैलियों को मिलाकर संगीत की रचनात्मकता को एक नई दिशा दी है।

सन्दर्भ

- https://sathee.prutor.ai/ncert-books/class-12/sangeet/tabla-evm-pakhawaj/chapter-01-taal-ki-awadharana-tatha-sangeet-me-iska-mehtav/
- https://hi.wikipedia.org/wiki
- https://uou.ac.in/sites/default/files/slm/BAMM(N)-120.pdf
- https://www.allsubjectjournal.com/assets/archives/2017/vol4issue5/4-7-18-526.pdf
- http://swarsindhu.pratibha-spandan.org/www/download/v07i01a04.pdf
- https://subharti.org/documents/finearts/arts/2015/1/16.%20Trupti%20Aggarwal.pdf